



प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक यथार्थ

Dr. Bimal Malik,

Assistant Professor Dept. Of Hindi,

CRM Jat College, Hisar

Doi: <https://doi.org/10.36676/urr.v11.i4.1539>

* Corresponding author

Accepted: 10/09/2024 Published: 27/09/2024

सारांश: हिंदी साहित्य के इतिहास में मुंशी प्रेमचंद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज की उस सच्चाई को प्रस्तुत किया, जिसे अक्सर उपेक्षित किया जाता था। यह शोध-पत्र प्रेमचंद की कहानियों में निहित सामाजिक यथार्थ को उजागर करने का प्रयास करता है, विशेष रूप से वर्ग संघर्ष, जातिगत भेदभाव, नारी जीवन, कृषक जीवन और नैतिक मूल्यों के संदर्भ में।

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के यथार्थवादी कथाकार माने जाते हैं। उनकी कहानियों में भारतीय समाज की सच्चाई, विशेष रूप से ग्रामीण जीवन, आर्थिक विषमता, जातिगत भेदभाव, नारी की दशा, किसान की पीड़ा, भ्रष्टाचार, शोषण और नैतिक द्वंद्व जैसी समस्याओं का अत्यंत सजीव चित्रण मिलता है। वे समाज के वंचित और पीड़ित वर्ग की आवाज़ बनकर सामने आते हैं।

प्रस्तावना: प्रेमचंद हिंदी साहित्य के युगप्रवर्तक कथाकार माने जाते हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय समाज की गहन पड़ताल की और उसमें व्याप्त विषमताओं, अन्याय, शोषण, गरीबी तथा वर्ग संघर्ष को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में जब भारतीय समाज औपनिवेशिक शासन, आर्थिक शोषण, जातिगत भेदभाव और सामाजिक रूढ़ियों से जूझ रहा था, तब प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में उस यथार्थ का सजीव चित्रण किया जो आम जनता के जीवन का हिस्सा था।

प्रेमचंद की कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं थीं, बल्कि वे समाज को आइना दिखाने का कार्य करती थीं। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से ग्रामीण जीवन की समस्याओं, किसानों की दुर्दशा, स्त्री की स्थिति, नैतिक पतन, धार्मिक आडंबर, और सामाजिक अन्याय जैसे विषयों को गंभीरता से उठाया। 'पंच परमेश्वर', 'कफन', 'सद्गति', 'ईदगाह', 'ठाकुर का कुआँ', 'बड़े भाई साहब' जैसी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ की उत्कृष्ट मिसालें हैं।

प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थ केवल घटनाओं का चित्रण नहीं है, बल्कि उसमें एक गहरी करुणा, संवेदनशीलता और सुधार की भावना निहित है। वे न केवल समस्याओं को उजागर करते हैं, बल्कि उनके





समाधान की दिशा में सोचने को भी प्रेरित करते हैं। उनके साहित्य में आदर्श और यथार्थ का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

इस प्रस्तावना के माध्यम से स्पष्ट है कि प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय समाज के यथार्थ की जीवंत झलक प्रस्तुत करती हैं और उन्हें सामाजिक चेतना का दस्तावेज भी माना जा सकता है।

प्रेमचंद को हिंदी कहानी और उपन्यास का जनक कहा जाता है। वे यथार्थवादी साहित्य के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनकी कहानियाँ उस समय के भारतीय समाज के विविध पक्षों को उजागर करती हैं। उनका लेखन केवल मनोरंजन नहीं बल्कि समाज-सुधार का एक सशक्त माध्यम भी था।

सामाजिक यथार्थ की अवधारणा: "सामाजिक यथार्थ" का अर्थ है समाज की वास्तविक स्थितियों, समस्याओं, संघर्षों, वर्ग विभाजन, असमानता, शोषण, गरीबी, बेरोजगारी आदि को उनकी असली और नग्न स्थिति में साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करना। यह यथार्थवाद जीवन के सौंदर्यीकरण की बजाय उसके कुरूप पक्षों को उजागर करता है ताकि पाठक समाज की सच्चाई से रूबरू हो सके और उसमें परिवर्तन की चेतना विकसित हो।

हिंदी साहित्य में सामाजिक यथार्थ की परंपरा को मजबूत करने में प्रेमचंद का योगदान सर्वोपरि है। उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय ग्रामीण जीवन, निम्न वर्ग की पीड़ा, किसान, मजदूर, स्त्री, दलित और समाज के शोषित वर्ग की स्थिति को अत्यंत संवेदनशीलता और सच्चाई के साथ चित्रित किया।

सामाजिक यथार्थ साहित्य में उस प्रवृत्ति को कहा जाता है जिसमें लेखक समाज के यथार्थ, समस्याओं और विषमताओं को बिना अलंकरण के प्रस्तुत करता है। प्रेमचंद का साहित्य इस यथार्थ को मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है।

प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक यथार्थ:

- **वर्ग संघर्ष और आर्थिक विषमता:** प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में अमीर और गरीब, मालिक और मजदूर, जमींदार और किसान के बीच के संघर्ष को प्रमुखता से दर्शाया है। **कहानी: "पूस की रात"** में गरीब किसान हल्कू की सर्दी में ठिठुरती दशा, खेती के संकट और आर्थिक असुरक्षा को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। **"सद्गति"** में दलित व्यक्ति की मृत्यु और ब्राह्मण की प्रतिक्रिया जातीय और आर्थिक शोषण का यथार्थ चित्रण है।
- **स्त्री की सामाजिक स्थिति:** प्रेमचंद ने स्त्री की दयनीय दशा, विवाह संस्था की विसंगतियाँ, विधवाओं की पीड़ा और नारी स्वतंत्रता के सवाल को गंभीरता से उठाया। **"निर्मला"** जैसी कहानी में बाल विवाह, दहेज, और स्त्री शोषण की सामाजिक त्रासदी को उभारा गया है। **"बड़े घर की बेटी"** में स्त्री की सामाजिक भूमिका और आत्मसम्मान को केन्द्र में रखा गया है।





- **जातिवाद और सामाजिक भेदभाव:** "सद्गति" में दलितों के प्रति समाज की अमानवीय दृष्टि को उजागर किया गया है। प्रेमचंद ने जातीय आधार पर होने वाले भेदभाव और पाखंड पर करारा प्रहार किया है।
- **शोषण और अन्याय:** "कफन" जैसी कहानी में गरीबी, बेबसी और व्यवस्था के प्रति उपजे विद्रोह को व्यंग्यात्मक और गहरे प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया गया है। मजदूरों, किसानों और दलितों की पीड़ा प्रेमचंद की कहानियों का केंद्रीय तत्व है।
- **मानवता और करुणा की दृष्टि:** प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थ केवल आरोप नहीं है, वह मानवीय करुणा और संवेदना से परिपूर्ण है। उनके पात्र त्रासदियों में भी मानवीय मूल्य और संवेदना की मिसाल बन जाते हैं।

प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक यथार्थ के प्रमुख पक्ष:

- **कृषक जीवन की त्रासदी:** कहानियाँ जैसे "पंच परमेश्वर", "पूस की रात", "कफन", "सद्गति" में किसानों की दुर्दशा, गरीबी और शोषण का मार्मिक चित्रण है।
- **वर्ग संघर्ष और आर्थिक विषमता:** "ईदगाह", "ठाकुर का कुआँ", "बड़े घर की बेटी" जैसी कहानियाँ आर्थिक असमानता और वर्ग संघर्ष को दर्शाती हैं।
- **जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय:** "सद्गति" और "ठाकुर का कुआँ" जातिवादी सोच और सामाजिक पाखंड को उजागर करती हैं।
- **नारी की स्थिति और संघर्ष:** "नमक का दारोगा", "बड़े घर की बेटी", "माँ", "मंत्र", "गृह-दाह" आदि कहानियाँ महिलाओं की सामाजिक स्थिति, अधिकार और उनके आत्म-संघर्ष को दर्शाती हैं।
- **नैतिकता और आदर्शवाद:** प्रेमचंद की कहानियाँ केवल यथार्थ का चित्रण नहीं करतीं, वे समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना का भी प्रयास करती हैं। "नमक का दारोगा", "पंच परमेश्वर" इस दृष्टिकोण से उल्लेखनीय हैं।

भाषा और शिल्प: प्रेमचंद की कहानियाँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं, जिनमें **सामाजिक यथार्थ**, **भाषा की सहजता** और **शिल्प की प्रभावशीलता** अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रेमचंद को "हिन्दी कथा साहित्य के सम्राट" कहा जाता है क्योंकि उन्होंने कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज के उस यथार्थ को सामने रखा जो उपेक्षित था। नीचे इन तीन पहलुओं—**सामाजिक यथार्थ**, **भाषा**, और **शिल्प**—का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत है:

प्रेमचंद की भाषा जनसाधारण की भाषा है—सरल, प्रवाहपूर्ण, और भावप्रवण। उनके शिल्प में कथा की सघनता, पात्रों की सजीवता और घटनाओं की स्वाभाविकता दिखाई देती है।





- **भाषा की विशेषताएँ:** सरल, सहज और संवादपूर्ण भाषा का प्रयोग। देशज शब्दावली और बोलचाल की शैली, जो आमजन से सीधे जुड़ती है। संस्कृतनिष्ठ या फारसीनिष्ठ भाषा से बचते हुए उन्होंने आम बोलचाल की हिन्दी-उर्दू मिश्रित भाषा का उपयोग किया।
- **भाषिक विविधता:** विभिन्न पात्रों के संवाद उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुरूप होते हैं। ग्राम्य भाषा और शहरी भाषा दोनों का संतुलित प्रयोग—उदाहरण: 'पूँस की रात' में हल्कू की बोली ग्राम्य और भावनात्मक है।
- **मुहावरे और लोकोक्तियाँ:** कहानियों में हिन्दी और उर्दू के मुहावरों व लोकोक्तियों का सुंदर प्रयोग किया गया है, जिससे कथानक में प्रभाव और गहराई आती है।

निष्कर्ष: प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय समाज का दर्पण हैं। वे न केवल यथार्थ का चित्रण करती हैं, बल्कि सामाजिक चेतना को भी जाग्रत करती हैं। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज को सोचने, समझने और बदलने की प्रेरणा दी। सामाजिक यथार्थ का जो चित्रण उन्होंने प्रस्तुत किया, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। प्रेमचंद की कहानियाँ भारतीय समाज के यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। उन्होंने अपने समय के शोषित, वंचित और पीड़ित वर्गों की समस्याओं को उजागर करते हुए साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया। उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि वे मानवीय संवेदना, न्याय और समरसता की बात करती हैं। प्रेमचंद के सामाजिक यथार्थ ने हिंदी साहित्य को केवल नई दिशा ही नहीं दी, बल्कि पाठकों को सोचने और समाज को समझने की दृष्टि भी प्रदान की।

संदर्भ सूची:

1. प्रेमचंद, मुंशी - *मानसरोवर* (सभी भाग)
2. विद्यानिवास मिश्र - *प्रेमचंद और हिंदी समाज*
3. रामविलास शर्मा - *प्रेमचंद और भारतीय समाज*
4. नामवर सिंह - *कहानी नई कहानी*
5. महाविद्यालयीन शोध-पत्र और जर्नल लेख

